Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

महात्मा गाँधी एवं गिज्जुभाई के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

विनोद कुमार
शोधकर्त्ता, एम0ए0 शिक्षाशास्त्र हण्डिया पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज हण्डिया, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

डॉ0 विजय बहादुर सिंह
शोध–निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष शिक्षाशास्त्र विभाग, हण्डिया पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज हण्डिया, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

Article Info
Volume 3, Issue 4
Page Number : 117-121

Publication Issue :
July-August-2020

Article History
Accepted : 03 July 2020
Published : 10 July 2020

सारांश– शिक्षा व्यक्ति और समाज के विकास की आधारशिला है दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। विकास की यह प्रक्रिया अनादि काल से होते हुए भी देश, काल, समय वातावरण और परिस्थिति के प्रभाव से निरन्तर एवं लगातार बदलती रहती है। शिक्षा के द्वारा परिवर्तन एवं बदलाव का दृष्टिकोण कभी भी क्षैतिज ना हो क शीर्षात्मक एवं लम्बवत की ओर हुआ। इसलिए प्रायः सभी शैक्षिक विचारकों ने शिक्षा को विकास की परिणति कहा है। महात्मा गाँधी एवं गिज्जुभाई बधेका के शैक्षिक विचारों एवं कृत्यों के समालोचनात्मक अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि गिज्जुभाई की शिक्षा सम्बन्धी अवधारणा सर्वांगीण विकास से सम्बन्धित है सर्वथा अनुकूल है। क्योंकि शिक्षा बालक के लिये होती है ना कि बालक शिक्षा के लिए होता है। बालक की शिक्षा प्राप्त करने के लिए पहले शारीरिक मानकिस तथा बौद्धिक दृष्टि से तैयार होना पड़ेगा क्योंकि जब तक वह तीनों दृष्टियों से तत्पर एवं तैयार नहीं होगा तब तक वह उस शिक्षा को ग्रहण नहीं कर सकता। जबकि शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षार्थी केन्द्र में होना चाहिए।

मुख्य शब्द– महात्मा गाँधी, गिज्जुभाई बधेका, शिक्षा, विचार, उद्देश्य, तुलना।

भूमिका– शिक्षा विकास का वह क्रम है, जिसमें व्यक्ति शैशवावस्था से प्रौढ़ावस्था की ओर बढ़ता है और इस क्रम में वह प्राकृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण के अनुसार अभिक्षमता ग्रहण करता है। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो प्राणी की जन्मजात शक्तियों, गुणों और अभिरूचियों का इस प्रकार विकास करती है कि जिससे ये उसको सामाजिक प्रर्यावरण में व्यवस्थित करने में सहायता देती है, साथ ही उसके व्यक्तित्व का विकास करती है तथा उसके सम्पूर्ण व्यवहार, आचार–विचार, व्यक्तित्व में ऐसा परिवर्तन करती है जो उसके अपने स्वयं के लिए तथा समाज राष्ट्र तथा देश के लिए लाभदायक हों।

अर्थात हम यह कह सकते हैं कि शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है अर्थात व्यक्ति अपने जन्म से मृत्यु तक के जो कुछ सीखता और अनुभव करता है वह सब शिक्षा का व्यापक अर्थ दर्शाता है व्यक्ति के सीखने को और अनुभव करने का परिणाम यह होता है कि वह शैनः–शैनः विभिन्न प्रकार से

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

अपने भौगोलिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पर्यावरण से अपने आपको समायोजित करता है। जीवन ही वास्तव में शिक्षित करता है। व्यक्ति अपने व्यवसाय, पारिवारिक जीवन, मित्रता, विवाह, पितृत्व, मनोरंजन, यात्रा आदि के द्वारा शिक्षित किया जाता है।

शिक्षा एक ऐसा सशक्त साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने आचार, विचार व्यवहार में परिवर्तन करता है। शिक्षा बन्द समाजों की समाप्ति कर नये तथा प्रगतिशील समाजों का निर्माण करती है? शिक्षा सीखने तथा सीखाने की प्रक्रिया है जो मनुष्य के जीवनपर्यन्त तक चलता है। शिक्षा अनवरत सतत् लगातार एक प्रक्रिया है।

सच्चा दार्शनिक वही होता है जो सत्य की खोज में लीन रहे लगातार खोज करता रहे अन्तिम सत्य की खोज करता रहे अन्तिम सत्य की खोज करके एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँच सके और समाज को एक नई दिशा दे सके। इन सब पर विचार विमर्श करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे जीवन में सौम्यता, सौन्दर्यता, नमनीयता, उत्कृष्टता, उच्चता लायी जा सकती है। शिक्षा के द्वारा ही समाज को एक नई दिशा मिल सकती है शिक्षा समाज को बदल सकती है क्योंकि शिक्षा और समाज एक दूसरे से सम्बन्धित है एक ही सिक्के के दो पहलू है एक के बिना दूसरे का कोई अस्तित्व नहीं है दोनों ही एक ही रथ के दो पहिये हैं दोनों का सम्बन्ध बहुत ही गहरा है शिक्षा ही समाज को एक नयी दिशा देकर अग्रसर करती है।

महात्मा गाँधी के शिक्षा दर्शन में शिक्षा और जीवन को सम्बन्धित मानते थे। शिक्षा व्यक्ति को जीवन के लिए तैयार करे। गाँधी जी चाहते थे कि शिक्षा के द्वारा एक ऐसे समाज का निर्माण हो जो स्वतंत्र हो जिसमें शोषण ना हो जो अहिंसा पर आधारित हो, जिसमें ऊँच और नीच का कोई भेद–भाव न हो। महात्मा गाँधी के शिक्षा दर्शन में समान प्रवृत्ति की झलक दिखाई पड़ती है जैसे वे रूसों के प्रकृतिवादी, प्लेटों के आदर्शवादी तथा डीवी के प्रयोजनवादी शिक्षा–दर्शनों के कारक मौजूद है सभी वाद से कुछ ना कुछ चीजों को आदर्श मानकर गाँधी जी ने अपनी अलग विचारधारा बनाई, जो एक नई विचारधारा बन गई जिसमें बालक, शिक्षक, पाठ्यक्रम जीवन–दर्शन, विद्यालय, अनुशासन सभी का महत्व सामने आया। एक और गाँधी जी ने प्रकृतिवादियों के समान शिक्षा में परम्परागत परम्पराओं को उखाड़ फेंकने की बात कहीं इन्द्रिय शिक्षण पर बल देने की बात कही, शिक्षा में स्वानुभव एवं स्वयं खोज प्रणाली को प्रयोग किया जाये, प्रकृतिवादी विचारधारा आधुनिक युग में समाज के दोषों, कृतिमताओं, बन्धनों, विकारों से बालक को अलग रखने के लिए एक आन्दोलन थी। दूसरी ओर आदर्शवादियों के समान मानव की इस सृष्टि की सर्वोत्तम रचना माना है। आदर्शवाद का मनुष्य में विश्वास है मनुष्य जीवों की श्रेणियों में सबसे उत्तम माना जाता है क्योंकि उसके पास चिन्तन, तर्क एवं बुद्धि के विशेष गुण है वास्तव में समस्त सृष्टि में मानव अन्तिम सीढ़ी है। मानव का आध्यात्मिक स्वभाव के जीवन का सार कहा जाना चाहिए। गाँधी जी को सम्पूर्ण भारतीय दर्शन से ही प्रमुख तथ्यों का चयन किया प्रथम सत्य तथा दूसरा अहिंसा। गाँधी जी की दृष्टि में सत्य और ईश्वर एक ही है सत्य की प्राप्ति वहीं कर सकता है जिसका हृदय शुद्ध है जहाँ सत्य नहीं है वहाँ शुद्ध ज्ञान की सम्भावना नहीं है सत्य जीवन का एक अंग ही नहीं है बल्कि एक महान से भी महान है। अहिंसा के सन्दर्भ में इनका मानना है कि ''अहिंसा सर्वोच्च कर्त्तव्य है। अहिंसा परम श्रेष्ठ मानव धर्म है। अहिंसा परम प्रेम और श्रद्धा पर निर्भर है। अहिंसा एक आध्यात्मिक अस्त्र है, जिससे आत्मा क्रियाशील होती है। गाँधी जी के अनुसार सत्य और अहिंसा ईश्वर की एकमात्र साधन है।

गिज्जुभाई एक मात्र भारतीय बाल शिक्षा विद् थे। उनके न पहले ही न तो कोई बाल शिक्षा विद नजर आता है और ना तो उसके पश्चात ही। बालकों के बारे में, इतनी गहराई से, इतनी पीड़ा और तर्क बुद्धि से सोचने वाले सिर्फ वही थे। गिज्जुभाई ने अपने छोटे से आयुष्य काल में गुजरात की शिक्षा के क्षेत्र में जो उल्लेखनीय कार्य किये थे उसके उल्लेख में शब्द कम पड़ जाते हैं कारण गिज्जुभाई एक व्यावहारिक स्वप्न दृष्ट थे। बालकों की शिक्षा को उन्हों मातृ शिक्षा के रूप एवं संक्षिप्त अर्थ में अंगीकार नहीं किया था, अपितु बाल शिक्षा को उन्होंने सामाजिक पुर्नरचना के माध्यम के रूप में ग्रहण करना शिक्षकों को सिखाया था। इसी भाँति माण्टेसरी के दार्शनिक विचारों तथा कार्यक्रमों को उन्होंने यहॉ की सांस्कृतिक परम्परा के द्वारा किस प्रकार से सम्बन्ध किया था तथा उनके बोधक उपकरणों एव बाल मानस शास्त्र पर कैसी–कैसी और कहाँ–कहाँ उल्लेखनीय एवं विचारणीय है।

समस्या कथन– 'महात्मा गाँधी एवं गिज्जुभाई के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन'।

अध्ययन के उद्देश्य –

प्रस्तुत अध्ययन कार्य के उद्देश्य निम्नलिखित है –

1. महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
2. गिज्जुभाई के शिक्षा सम्बन्धी योगदान का अध्ययन करना।
3. वर्तमान शैक्षिक संदर्भ में गाँधी शिक्षा दर्शन एवं गिज्जुभाई शिक्षा दर्शन की उपयोगिता का अध्ययन करना।

महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचार– गाँधी जी साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते हैं और बताते हैं कि यह शिक्षा रूपी साध्य का साधन है। हाँ, बिना साधन के साध्य सम्भव नहीं है। इसलिए वे इसका प्रयोग संकुचित और व्यापक दोनों अर्थों में करते हैं। वे शिक्षा के विषय में लिखते हैं कि – ''शिक्षा से मेरा तात्पर्य है कि बालक और मनुष्य में निहित शक्तियों का शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास सर्वोत्तम हो। साक्षरता न तो शिक्षा का आदि है और न ही अन्त, बल्कि यह तो पुरूष और स्त्री दोनों को शिक्षित करने का मात्र साधन है।''

गाँधीजी आगे कहते हैं कि – ''शिक्षा द्वारा ऐसे वातावरण का निर्माण किया जाता है, जिसमें विकास समान रूप से हो सकें।''

गाँधीजी ने शिक्षा को भौतिकवादी विचारों से दूर रखकर आध्यात्मिक पृष्ठभूमि में रखते हुए कहा है कि – ''सच्ची शिक्षा को भौतिक शक्ति का नहीं अपितु आध्यात्मिक शक्ति का विकास करना चाहिए।''

गाँधीजी के शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए महादेव देसाई ने लिखा है कि '' गाँधीजी की मंशा थी कि शिक्षा ऐसी हो जो बालक–बालिकाओं को सम्पूर्ण मनुष्य बना सके। कोई भी शिक्षा गम्भीर नहीं हो सकेगी, जो बालक–बालिकाओं को पूर्ण मनुष्य एवं नागरिक न बना सकती हो।'' उन्होंने साक्षरता को कभी भी महत्व नहीं दिया। उनका मानना था कि 'एक चरित्रवान चरवाहा आजकल के साक्षरों से अच्छा नागरिक है।'

शिक्षा आत्मनिर्भरता का एक प्रबल साधन है अर्थात शिक्षा में आत्मनिर्भरता का भाव निहित है, ऐसा विचार गाँधीजी का था। उन्होंने वर्धा शिक्षा –योजना के पृष्ठभूमि में लिखा है कि –

''शिक्षा बेकारी के निवारण हेतु एक प्रकार का बीमा होना चाहिए।'' भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में आत्मनिर्भरता से विहीन शिक्षा आदर्श मात्र रह जायेगी। अस्तु इसे व्यावहारिक और प्रायोगिक रूप देने के लिए महात्मा ने 'हरिजन' नामक पत्रिका में लिखा है कि –

''शिक्षा को पूर्णरूपेण आत्म–निर्भर होना चाहिए। वास्तव में आत्मनिर्भरता ही इस शिक्षा–योजना (वर्धा शिक्षा–योजना, बुनियादी शिक्षा–योजना या बेसिक शिक्षा–योजना) की व्यावहारिकता की कसौटी है।''

गाँधीजी ने शिक्षा में अहिंसा को प्रमुखता प्रदान की है और माना है कि – ''सभी दुर्गुणों का एक मात्र औषधि अहिंसा ही है।'' यह विचार उन्होंने व्यक्ति किया है।

इस प्रकार गाँधी जी ने वास्तविक शिक्षा की व्याख्या प्रस्तुत की है। इनकी शिक्षा मानव के समग्र विकास पर बल देती है तथा उनमे स्वावलम्बन, आत्मनिर्भरता, अहिंसा आदि का भाव विकसित करती है।

गिज्जुभाई के शैक्षिक विचार– गिज्जुभाई का शैक्षिक चिन्तन शिशु शिक्षा तक ही सीमित रहा क्योंकि उन्होंने शिक्षा सम्बन्धी अपने सभी विचारों को केवल प्राथमिक शिक्षा से ही सम्बन्धित ही किये हैं। गिज्जुभाई ने टैगोर, महात्मा गाँधी जी को विस्तार से अध्ययन किया था। उनके ऊपर बहुत ही ज्यादा अधिक प्रभाव डॉ0 मॉरिया माण्टेसरी का पड़ा था। अपनी पुस्तक माण्टेसरी पद्धति में गिज्जुभाई बधेका लिखते हैं कि 'अगा मुघ्कसे कियी पे वूर्च में ही आगाह कर दिया होता है कि माण्टेसरी गदर नामक पुस्तक पढ़ने से मेरी जीवन धारा परिवर्तित हो जायेगी, जीवन एक नये प्रकाश में झिलमिला उठेगा और मुझको क्रान्तिकारी दृष्टि प्राप्त हो जायेगी तो मेरे जैसा एक अधिवक्ता इस पुस्तक को अपने स्वयं हाथ में थामता या नहीं, यह एक मुख्य एवं विचारणीय सोचनीय प्रश्न हैं।

इस तरह से माण्टेसरी के विचारों से अभिभूत होकर गिज्जुभाई ने माण्टेसरी के बाल केन्द्रित शिक्षा के आविष्कारों को भारतीय वातावरण पर्यावरण के अनुसार बदलाव/परिवर्तन कर प्राथमिक शिक्षा में लागू किया। शिशु शिक्षा सम्बन्धी इनके विचार कई पुस्तकों में उल्लेखबद्ध है जिनमें दिवास्वप्न, बाल शिक्षण जैसा मैंने समझा ऐसे हो शिक्षक, और प्राथमिक विद्यालयों में भाषा शिक्षण विशेष महत्व की है। दिवास्वप्न कहानी विद्या में लिखी गयी है। जिसमें अध्यापक अपनी आने वाली शाखा का ताना–बाना बुनता है। यह शिक्षक कोई और नहीं बल्कि साक्षात गिज्जुभाई ही हैं। दिवास्वप्न में शिक्षा सम्बन्धी अपने विचार प्रस्तुत करते हुए गिज्जुभाई का मानना था कि शिक्षा द्वारा बालक अथवा व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक सभी पक्षों का विकास होना चाहिए। साथ ही साथ उसका वैयक्तिक विकास भी इस शिक्षा का दायित्व है। अर्थात शिक्षा बालक तथा व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होना मानती है। क्योंकि शिक्षा बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करके सभी पक्षों का विकास करने में सहायक है।

निष्कर्ष – भारतीय परिवेश के शैक्षिक विचारक महात्मा गाँधी एक व्यवहारिक शिक्षा शास्त्री थे। उनके शिक्षा सम्बन्धित विचार उनके द्वारा किये गये शैक्षिक प्रयोगों का परिणाम है वे शिक्षा को सर्वांग दृष्टिकोण से देखते थे। उनके विचार से सच्ची शिक्षा वह है जो कि बालकों की बौद्धिक और शारीरिक और आध्यात्मिक शक्तियों को विकसित एवं प्रोत्साहित करती है। वही पेशे से वकील बच्चों के बापू गिज्जुभाई के बालदर्शन अथवा शिक्षा दर्शन एवं प्रयोगों पर दृष्टिपात करने से यह पता चलता है कि वे शिक्षा के द्वारा मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना तथा मनुष्य के जीवन का अन्तिम उद्देश्य ईश्वर की प्राप्त को मानते हैं। जिसे मनुष्य, नैतिकता, मूल्यता तथा आध्यात्मिकता के पालन तथा ईश्वर भक्ति द्वारा प्राप्त कर सकता है। दोनों विचारकों के शैक्षिक विचारों एवं कृत्यों के समालोचनात्मक अध्ययन के बाद यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि गिज्जुभाई की शिक्षा सम्बन्धी अवधारणा सर्वागीण विकास से सम्बन्धित है सर्वथा अनुकूल है। क्योंकि शिक्षा बालक के लिये होती है ना कि बालक शिक्षा के लिए होता है। बालक की शिक्षा प्राप्त करने के लिए पहले शारीरिक मानकिस तथा बौद्धिक दृष्टि से तैयार होना पड़ेगा क्योंकि जब

तक वह तीनों दृष्टियों से तत्पर एवं तैयार नहीं होगा तब तक वह उस शिक्षा को ग्रहण नहीं कर सकता। जबकि शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षार्थी केन्द्र में होना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गाँधी, महात्मा (1953). बुनियादी शिक्षा, इलाहाबाद, नवजीवन मण्डल।
2. गाँधी, महात्मा (1958). नई तालीम की ओर, अहमदाबाद, नवजीवन प्रकाशन मंदिर।
3. बधेका, गिजुभाई (1999). माण्टेसरी पद्धति, बीकानेर, बाग्देवी प्रकाशन।
4. बधेका, गिज्जुभाई (2005). प्राथमिक विद्यालय में शिक्षण पद्धतियाँ, जयपुर, गीतांजलि प्रकाशन।
5. मंत्री, गणेश (1998). महात्मा गाँधी और डा0 अम्बेडकर, दिल्ली प्रभात प्रकाशन।
6. लाल, रमन बिहारी (2004). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठ, रस्तोगी पब्लिकेशन्स।
7. विवेक, रामलाल (2000). महात्मा गाँधी : जीवन और दर्शन, जयपुर, पंचशील प्रकाशन।
8. श्रीमाली के0एल0 (1958). द वर्धा स्कीम्, वाराणसी, सर्वोदय साहित्य प्रकाशन।
9. श्रीवास्तव, एन0बी0एल0 (1968). बेसिक शिक्षा सिद्धान्त की रूपरेखा, वाराणसी, सर्वोदय साहित्य प्रकाशन।